

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा जानना, सत्र 13, ईश्वर की कृपा की भूमिका

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर हमारे व्याख्यान में आपका फिर से स्वागत है। विषय-सूची के अनुसार, हम भाग तीन में हैं, व्यक्तिपरक चुनौतियों को समझना। हमने विवेक के बारे में बात की है।

पिछली बार जब हमने छोड़ा था, तब हम पवित्र आत्मा के बारे में बात कर रहे थे। मेरा समय बहुत ज़्यादा हो गया था। और जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं वहाँ कुछ खत्म करने जा रहा हूँ, लेकिन आपको नोट्स की ज़रूरत नहीं है, ठीक है? क्योंकि आज का व्याख्यान वास्तव में व्याख्यान 13 है।

जो कि प्रोविडेंस की भूमिका है, जो कि जी.एम. 13 है। जी.एम. 13, प्रोविडेंस की भूमिका। ये वो नोट्स हैं जो आज व्याख्यान सुनते समय आपके पास उपलब्ध होने चाहिए।

लेकिन आत्मा की भूमिका थोड़ी लंबी थी। वास्तव में, मुझे लगता है कि मुझे इसे जल्दी करने की ज़रूरत है। लेकिन मेरा मुख्य कार्य आपको इतना उत्सुक बनाना है कि आप स्वयं कुछ शोध करें क्योंकि आपके विश्वासों को आपको ही विकसित करना होगा।

आप सिर्फ मेरी बात नहीं सुन सकते। मैं आपको संकेत देता हूँ और आपको कुछ दिशाएँ बताता हूँ। आपको अपना काम खुद करना होगा और अपने निष्कर्ष पर पहुँचना होगा, कम या ज़्यादा, यह आपके कौशल और उस पर सोचने के लिए आपके पास मौजूद समय पर निर्भर करता है।

लेकिन जब हमने पिछली बार आत्मा की भूमिका पर बात करना बंद किया था, तो मैं वास्तव में इसे पूरा नहीं कर पाया था। हमने कहा कि हम कुलुस्सियों और कुछ अन्य ग्रंथों के बारे में बात कर रहे थे जिन्हें पॉल की धार्मिक भाषा के कारण आसानी से गलत तरीके से पढ़ा जा सकता है। लेकिन मैं इस विशेष स्लाइड पर आता हूँ, जिसकी आपको आवश्यकता नहीं है।

जैसा कि मैंने कहा, आप मेरे द्वारा चीजों को समझाने के तरीके से जान जाएंगे कि क्या हो रहा है। आत्मा के कार्य और मार्गदर्शन से संबंधित सिद्धांत। प्रेरित काल के दौरान, परमेश्वर ने मुक्ति-ऐतिहासिक उद्देश्यों के लिए रहस्योद्घाटन मार्गदर्शन का उपयोग किया।

पुराने नियम के समय में, उन्होंने सीधे संवाद किया, उन्होंने पुजारियों के साथ काम किया, और उन्होंने पुराने नियम के बाकी हिस्सों के लिए मुख्य रूप से भविष्यवक्ताओं के साथ काम किया। लेकिन वह एक खुली रहस्योद्घाटन प्रक्रिया थी। उनके धर्मग्रंथ प्रक्रिया में थे, जैसे वे नए नियम के दौर में थे, लगभग सौ से अधिक।

लेकिन यह रहस्योद्घाटन था। यह उस तरह का मार्गदर्शन नहीं था जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। वर्तमान चर्च युग में, परमेश्वर का वचन ही हमारा एकमात्र अचूक नियम है।

हमारे पास कोई और अचूक नियम नहीं है। आप अपनी इच्छानुसार हर जगह आत्मा की उपस्थिति का दावा कर सकते हैं, लेकिन फिर भी आप अचूक नहीं हैं क्योंकि यह एक व्यक्तिपरक दावा है। एक ऐसा दावा जो मुझे लगता है कि गुमराह करने वाला हो सकता है।

परमेश्वर का वचन हमारा एकमात्र अचूक नियम है। इसके अलावा, परमेश्वर का वचन परिपूर्ण और पर्याप्त है। पर्याप्त का अर्थ यह नहीं है कि यह बाइबल के समय से चल रही संस्कृतियों में सब कुछ संबोधित करता है, बल्कि इसका अर्थ है कि यह आपके प्रत्यक्ष निहित और रचनात्मक निर्माणों के साथ उस तक पहुँचने के लिए पर्याप्त है।

आपके पास अपने जीवन को प्रबंधित करने के लिए एक निश्चित वचन है। फिर भी, ईसाईयों में इनमें से कई बातों पर मतभेद है क्योंकि, परमेश्वर के आदेशों के अनुसार, उसने सभी को एक ही निष्कर्ष पर लाने के लिए हस्तक्षेप नहीं किया। वह ऐसा कर सकता था, लेकिन उसने ऐसा करने का चुनाव नहीं किया।

उसने हमारे पास इतनी विविधता क्यों होने दी, यह केवल ईश्वर ही जानता है। लेकिन हमारे पास यही है। यह परिस्थितियों की स्थिति है, इसलिए हमें इसे संभालना होगा, फिर इसके बारे में सोचना होगा और अपने संदर्भ में इससे निपटना होगा।

परिणामस्वरूप, हमें बाइबल से बाहर के रहस्योद्घाटन की तलाश नहीं करनी चाहिए। काश हमें ऐसा करने के लिए कहा जाता। क्या यह अद्भुत नहीं होगा कि हमारे पास अपनी मेज़ पर एक नीला फ़ोन हो, जिसे उठाकर हम सीधे परमेश्वर से बात करें, और वह हमें बताए कि हमें क्या करना है?

यहां तक कि जब बाइबल इस बारे में कुछ नहीं कहती, तब भी वह हमें बता सकता है। लेकिन परमेश्वर ने ऐसा करने का चुनाव नहीं किया। उसने हमें रोबोट नहीं बनाया।

उसने हमें अपने स्वरूप में बनाया है ताकि हम सोच सकें, महसूस कर सकें, चुनाव कर सकें और निर्णय ले सकें। वह हमें गलतियाँ करने की भी अनुमति देता है, ताकि शायद हम सही निर्णय लेकर अपने जीवन की स्थिति को सुधार सकें। इसलिए, बाइबल से बाहर के रहस्योद्घाटन की तलाश न करें।

आप वह मांग रहे हैं जो ईश्वर नहीं देने वाला। ईश्वर की इच्छा खोई नहीं है। यह छिपी नहीं है।

ईश्वर की इच्छा पाई जाती है। इसलिए, मेरे विचार से रहस्योद्घाटन मार्गदर्शन की मांग करना ईश्वर के संचालन के तरीके के विपरीत है। ठीक है, अब आइए इसका अभ्यास करें।

हम विवेक के बारे में बहुत बात कर रहे हैं। और आपको याद होगा, हमारी सोच प्रक्रियाओं के भीतर विश्वदृष्टि और मूल्यों के जटिल होने के कारण, विवेक हमेशा विश्वदृष्टि और मूल्यों को देखता है। और अगर हम इसका उल्लंघन करते हैं, तो विवेक दर्द का कारण बनता है।

यह दर्द कि, अरे, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। या कम से कम यह सवाल कि, क्या मैं यहाँ से भटक गया हूँ? और इसलिए, परिणामस्वरूप, आपके पास यह लगातार चलता रहता है। लेकिन अब, जब हम आत्मा के बारे में बात करते हैं, तो हम देखते हैं कि आत्मा और विवेक दोनों ही गवाह थे।

यही उनकी मुख्य रस्सी थी। तो, देखिए कि एक पल में क्या होने वाला है। आंतरिक आलोचनात्मक आत्म-जागरूकता विवेक और आत्मा का क्षेत्र है।

विश्वदृष्टि और मूल्यों का एक आंतरिक साक्षी जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। इसलिए, दिन के अंत में, आत्मा भी, सचेत रूप में, हमारी सोच के संबंध में हमें देख रही है। और जब हम किसी चीज़ के बारे में दृढ़ विश्वास रखते हैं, तो हमारे लिए यह दावा करना संभव नहीं है कि वह विश्वास कहाँ से आया है।

क्या यह हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के संबंध में हमारे आंतरिक आत्म-प्रतिबिंब और विवेक से आया था? या यह इसलिए आया क्योंकि आत्मा हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों पर अपनी उंगली रखती है? उसकी उंगली। और इसलिए, यह एक प्रश्न बन जाता है। और इसलिए, दिन के अंत में, जो होता है वह यह है।

पवित्र आत्मा और विवेक मन में काम करते हैं। आत्मा, विवेक की तरह, दोषी ठहराती है। यह हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के संदर्भ में मुख्य शब्द है।

हमारी चुनौती है कि हम अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के आधार पर मुद्दों को अलग-अलग पहचानें। और उस आंतरिक दबाव के प्रति जागरूक रहें, जिसे हम महसूस करते हैं। हम इसे कई नाम देते हैं।

मैं इसे बस दृढ़ विश्वास कहूंगा। और वास्तव में दिन के अंत में कुछ मायनों में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, चाहे यह हमारा विवेक हमें दोषी ठहरा रहा हो या फिर आत्मा। दोनों ही हमें एक ही काम करने के लिए कह रहे हैं।

अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों की जांच करना। जिन मुद्दों के बारे में हम सोच रहे हैं, उनके संबंध में शोध करना। शॉर्टकट न अपनाना, जो हमारी अपनी भावनाओं तक ही सीमित है, जो हमें हर बार गुमराह करेगी।

तो, आप देख सकते हैं कि इस पूरी प्रक्रिया में विवेक और आत्मा किस तरह से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। विवेक और पवित्र आत्मा में अंतर करना। चूँकि विवेक और पवित्र आत्मा मन में काम करते हैं, इसलिए उन आवाज़ों में अंतर करना असंभव है जिन्हें हम सुनने का दावा करते हैं।

अब, ऐसे लोग होंगे जो कहेंगे कि यह सच नहीं है। खैर, आप चाहें तो इस तरह से सोच सकते हैं, लेकिन आप पाएंगे कि आप शास्त्रों का अध्ययन करते हैं और सबूत ढूँढते हैं। लेकिन आपको बाइबल का अध्ययन संदर्भ में करना होगा।

आप प्रेरितों से चुने गए पाठ को नहीं चुन सकते हैं जो उनके लिए लक्षित थे, जैसे कि अपर रूम प्रवचन और अन्य स्थानों में। आप पुराने नियम से चुने गए पाठ को नहीं चुन सकते हैं। और कई पाठ वास्तव में आपको धर्मग्रंथ की ओर संकेत करते हैं।

आप इसे समझ नहीं पाते क्योंकि आपने पाठ को उतनी सावधानी से नहीं पढ़ा जितना आपको पढ़ना चाहिए था। इसलिए, चूंकि विवेक और आत्मा मन में काम करते हैं, इसलिए उन आवाज़ों को पहचानना असंभव है जिन्हें हम सुनने का दावा करते हैं। हम खुद ही खुद से बात कर रहे हैं।

लेकिन उस रहस्यमय पहलू में, परमेश्वर की आत्मा हमें और हमारे विवेक को दोषी ठहरा सकती है और शायद उससे भी ज़्यादा। लेकिन आत्मा विषय-वस्तु नहीं बताती, चाहे वह नई रहस्योद्घाटन वाली विषय-वस्तु हो या व्याख्यात्मक विषय-वस्तु। आप कागज़ के एक टुकड़े पर पाँच विचार लिख सकते हैं और कह सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं, पवित्र आत्मा, मुझे बताओ कि कौन-सा सत्य है।

खैर, आपने अभी भगवान का अपमान किया है क्योंकि यह उस तरह से काम नहीं करता है। भगवान आपको अपना होमवर्क करने, अपना सर्वश्रेष्ठ करने, निर्णय लेने और फिर उसके साथ जीने के लिए कहते हैं, जब तक कि किसी भी कारण से, आपको पुरस्कृत न किया जाए या आपको इसे फिर से महत्व देने के लिए न कहा जाए। परिणामस्वरूप, हम उन आवाज़ों को पहचानते हैं जिन्हें हम अपने न्यायोचित बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली के आधार पर सुनने का दावा करते हैं।

यह हमेशा परिवर्तित मन पर वापस आता है। याद रखें, आत्मा की भूमिका दोषी ठहराना है, विषय-वस्तु का संचार करना नहीं। ठीक है, तो कम से कम हमारे उद्देश्यों के लिए, पवित्र आत्मा का यह हिस्सा समाप्त हो गया।

जाहिर है, हमारे पास और भी बहुत कुछ शोध है जो आपको खुद करने की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन अब, हम यहाँ प्रोविडेंस के मुद्दे पर चर्चा करने जा रहे हैं, और आपको प्रोविडेंस की भूमिका पर इस विशेष सत्र, जीएम 13 के लिए अपने नोट्स की आवश्यकता होगी। वाह, अगर आप पवित्र आत्मा या यहाँ तक कि विवेक के बारे में सोचते हैं, तो इनमें से कुछ चीजों की तुलना में विवेक एक केक का टुकड़ा है, और वे सभी प्रोविडेंस के मुद्दे की तुलना में आसान हैं।

आप एक सरल कथन द्वारा ईश्वर की कृपा को सरल बना सकते हैं: ईश्वर ने यह किया। ईश्वर और हर चीज़ को प्रभु से जोड़ दें। अपनी गलतियों, अपनी असफलताओं के लिए आप बस यह कह सकते हैं कि यह सब ईश्वर का है।

वह मुझे कुछ सिखा रहा है। सच कहूँ तो मुझे लगता है कि यह एक तरह की लापरवाही है। मैं अपनी मूर्खता और लापरवाही, अपनी कम सोच के लिए भगवान को दोष नहीं देना चाहता।

इसलिए, हमें इस बारे में सावधान रहने की ज़रूरत है कि हम प्रोविडेंस के इस मुद्दे पर कैसे विचार करते हैं। इसके अलावा, प्रोविडेंस वह क्षेत्र है जहाँ साहित्य और नैतिकता में बुराई की

समस्या का इलाज किया जाता है, और प्रोविडेंस की भूमिका उसी में है। और यह धर्मशास्त्र में सबसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में से एक है।

इसलिए, मैं यहाँ सिर्फ ईश्वर की कृपा पर ही बात करूँगा, चरम सीमाओं के बीच एक सुखद मध्य मार्ग खोजने की कोशिश करूँगा और हमें कुछ बड़ी तस्वीरों के बारे में सोचने के लिए कहूँगा। यह थोड़ा संक्षिप्त होगा, लेकिन मुझे लगता है कि हम यहाँ इतना ही कर सकते हैं। संप्रभुता की निरंतरता पर विवाद।

याद रखें, संप्रभु एक संज्ञा है, और भगवान संप्रभु है। वह इस तरह का भगवान है। संप्रभुता, भगवान की संप्रभुता, इसे क्रियाविशेषण क्षेत्र में अधिक रखती है, जिस तरह से भगवान कार्य करते हैं।

प्रोविडेंस शब्द वास्तव में ईश्वर के कार्यों को शामिल करता है, भले ही हम संप्रभुता को क्रियाविशेषण विचार में बदल दें और उनका वर्णन उसी तरह करें। और इसी तरह मैं उन्हें अलग रखना पसंद करता हूँ। हमारे पास एक संप्रभु ईश्वर है, और प्रोविडेंस उसकी गतिविधि है।

अब, संप्रभुता या प्रोविडेंस के शास्त्रीय दृष्टिकोण, मुझे कहना चाहिए, और खुले ईश्वरवाद के दृष्टिकोण का एक सातत्य है, जो दृश्य में आया और, मुझे यकीन है कि इसकी जड़ें प्राचीन हैं, लेकिन हम हाल ही में आए हैं। प्रोविडेंस के मुद्दे के उच्च दृष्टिकोण में, हमने ऑगस्टीन, केल्विन, जॉनथन एडवर्ड्स और कई अन्य लोगों के शास्त्रीय दृष्टिकोण को देखा। वे दावा करते हैं कि ईश्वर सब कुछ जानता है, ईश्वर सब कुछ नियंत्रित करता है।

और जैसा कि मैं इसमें थोड़ा जोर देकर कहूँगा, स्वतंत्र इच्छा प्रकृति से बंधी हुई है। इसलिए स्वतंत्रता भी प्रतिबंधित है, लेकिन यह प्रकृति के मुद्दे से प्रतिबंधित है। एक निम्न दृष्टिकोण, जो आज कई हलकों में बहुत प्रमुख है।

जॉन सॉन्डर्स नाम का एक महान लड़का जिसे हम खुले ईश्वरवाद कहते हैं, उसका मुख्य प्रस्तावक था। मैं खुले ईश्वरवाद का विशेषज्ञ नहीं हूँ। मैं खुले ईश्वरवाद का नौसिखिया भी नहीं हूँ।

मैं शास्त्रीय दृष्टिकोण का समर्थक हूँ। वे मानवता को पूरी तरह से स्वतंत्र मानते हैं, और उनके पास ईश्वर के बारे में ऐसे कथन हैं जो मुझे हैरान कर देते हैं। ईश्वर सभी चीज़ों को पहले से नहीं जानता, लेकिन जब वे घटित होती हैं तो वह अपनी बुद्धि से उनसे निपटता है।

मुझे लगता है कि यह मानवीय स्वतंत्रता की रक्षा का एक हिस्सा है। खैर, मैं इसमें नहीं जा रहा हूँ। आप इसे देख सकते हैं और इससे निपट सकते हैं।

इसलिए हमारे पास उच्च दृष्टिकोण है, निम्न दृष्टिकोण है। मैं उच्च मार्ग, शास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाते जा रहा हूँ और भगवान जानता है, भगवान नियंत्रण करता है, लेकिन हमारे सामने बहुत सी चुनौतियाँ हैं। निम्न दृष्टिकोण से चुनौतियों का उत्तर देना आसान है।

मेरी राय में शायद यही बात इसे गलत बनाती है, क्योंकि आसान उत्तर कभी भी सही उत्तर नहीं होते, सच कहूँ तो। शास्त्रीय दृष्टिकोण पर उच्च दृष्टिकोण वही है जो मैं सुझाऊँगा। मैंने जो सबसे अच्छी किताबें देखी हैं, उनमें से एक जो वास्तव में प्रोविडेंस के मुद्दों को संबोधित करती है, वह है स्पीगल की यह किताब, प्रोविडेंस के लाभ, और क्रॉसवे की *दिव्य संप्रभुता पर एक नया नज़रिया* /

मैं आपको नोट्स में इस पर, प्रोविडेंस पर एक ग्रंथ सूची दूँगा, लेकिन यह एक ऐसी जगह है जहाँ जाना है। जॉन पाइपर ने हाल ही में प्रोविडेंस पर एक बहुत बड़ी किताब लिखी है, लेकिन मेरी राय में, पाइपर ने जो किया है वह प्रोविडेंस को चित्रित करना है, जरूरी नहीं कि अधिक कठिन क्षेत्रों को समझाया हो। उन्होंने हमें प्रोविडेंस के बारे में छंद, कथाएँ और प्रतिमान दिए हैं, लेकिन अन्य पुस्तकें उस क्षेत्र की दार्शनिक और धार्मिक चुनौतियों से बहुत अधिक निपटती हैं।

ईश्वर की कृपा का अर्थ है ईश्वर की अदम्य क्रियाएँ। मैंने कई साल पहले अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन में जॉब 42,2 की आयत याद की थी। यह मेरी ज़िंदगी की आयतों में से एक है, और वह है, जॉब ने कहा, मैं जानता हूँ कि तुम सब कुछ कर सकते हो और तुम्हारा कोई भी उद्देश्य रोका नहीं जा सकता।

तुम वहाँ पुरानी भाषा सुनते हो। मैं जानता हूँ कि तुम सब कुछ कर सकते हो और तुम्हारा कोई भी उद्देश्य रोका नहीं जा सकता। ईश्वर का विधान हमारा क्षेत्र नहीं है।

हम इसका अनुभव करते हैं, हम इसका निरीक्षण करते हैं, आमतौर पर घटना के बाद, चाहे वह कुछ भी हो। भगवान के नियंत्रण से बाहर कुछ भी नहीं है। अगर कोई उल्का पृथ्वी से टकराता है और बहुत नुकसान और विनाश करता है, तो यह अभी भी भगवान के विधान के अधीन होगा और पृथ्वी के निवासियों के लिए नकारात्मक विधान होगा, लेकिन इससे भगवान को आश्चर्य नहीं हुआ।

शायद भगवान हस्तक्षेप कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। यह केवल भगवान की बुद्धि में ही है कि हम कुछ प्रमुख नकारात्मक बातों को समझा सकते हैं, खासकर भौतिक क्षेत्र में, चाहे वह विद्वान ही क्यों न हो। मैं कुछ विद्वानों को जानता हूँ जो युवावस्था में ही मर गए, अपने चरम पर।

यार, हम बस दूसरे खंड का इंतज़ार कर रहे थे, और वे मर गए। और वे दुर्घटनावश मर गए, ज्यादातर बार, कभी-कभी बीमारी से। भगवान ने उन्हें क्यों नहीं बचाया? मेरा मतलब है, वे मूल्यवान, बहुत मूल्यवान विरोधाभास बना रहे थे।

खैर, भगवान आमतौर पर जीवन में हस्तक्षेप करने का चुनाव नहीं करते हैं। जीवन चलता रहता है, लेकिन वह हस्तक्षेप करने का चुनाव नहीं करते हैं। यह उनका आदर्श है।

हमने देखा है, हम सभी इसे हर समय देखते हैं। यहाँ तक कि बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की मृत्यु भी तब हुई जब यीशु कुछ मील दूर धरती पर चल रहे थे, और यीशु ने हस्तक्षेप नहीं किया। यीशु

ने लूका की पुस्तक में जो कहा है उसके अनुसार यूहन्ना स्त्री से जन्मा सबसे महान व्यक्ति है, और फिर भी उसने हस्तक्षेप नहीं किया।

इसलिए, हमें इस तथ्य के आदी हो जाना चाहिए कि जीवन में हम जो कुछ भी अनुभव करते हैं, खासकर, हम निश्चित रूप से इसके नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे। कम रोजगार, कम वेतन, कैंसर, सभी तरह की बीमारियाँ। हमारे कुछ अच्छे दोस्त हैं जिन्हें एमएस है, और लू गेहरिग की बीमारी ने कई प्रमुख ईसाई नेताओं को प्रभावित किया है जिन्हें हम जानते हैं।

और इसलिए, परिणामस्वरूप, आप इसके बारे में क्या करते हैं? खैर, आपको इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि इसे ही मैंने नकारात्मक नियति कहा है। दर्द, शारीरिक बुराई, प्रशांत महासागर में सुनामी, फ्लोरिडा में जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ तूफान, उत्तर में बर्फ, उम्म, शराबी जो बच्चों को कुचल देते हैं, उम्म, यह एक नकारात्मक नियति है। और आप बहुत सारे मुद्दों में उलझ जाते हैं।

हमने इस बारे में पहले भी बात की थी जब मैंने आपको पंथ पढ़ा था, जिसमें ईश्वर के बारे में बात की गई थी, जिसमें उनके आदेश में प्रावधान, संप्रभु आदेश और यहां तक कि द्वितीयक कारण भी शामिल थे। और यह एक प्रमुख मुद्दा है जिसका आपको दर्शन और धर्मशास्त्र में अध्ययन करना होगा। हम यहां इस पर चर्चा नहीं कर रहे हैं, लेकिन यह इस क्षेत्र के लिए बिल्कुल महत्वपूर्ण है।

ठीक है। व्यवस्थाविवरण 29:29. गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा की हैं।

यह ASV की प्रतिध्वनि है। लेकिन जो बातें प्रकट की गई हैं, वे हमेशा के लिए हमारी और हमारी संतानों की हैं, ताकि हम इस व्यवस्था के सभी वचनों का पालन कर सकें। हम सब मिलकर जो बातें कर रहे हैं, है न? परमेश्वर की संप्रभुता हमारे सामने प्रकट नहीं की गई है, लेकिन उसकी नैतिक इच्छा और व्यवस्था के वचन प्रकट किए गए हैं, और यही हमारी जिम्मेदारी का क्षेत्र है।

इतना ही नहीं, करना, खोजना नहीं, व्यवस्था की सारी बातें करना। जैसा कि मैंने बताया, अय्यूब 42 भी, और यशायाह 46, 10, लेकिन व्यवस्थाविवरण 29, 29 एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ है। आमोस 3, 7, निश्चित रूप से प्रभु यहोवा, जो प्रभु होगा, अपने सेवकों, भविष्यद्वक्ताओं को अपना रहस्य प्रकट करने के अलावा कुछ नहीं करेगा।

अब, मानवता के क्षेत्र से संबंधित कुछ भी नहीं होगा। ऐसी कई चीजें हैं जो परमेश्वर ने अभी तक हमें नहीं बताई हैं। जब तक हम नए नियम में नहीं आते, तब तक उन्होंने चर्च के विचार को प्रकट नहीं किया।

वे अभी भी उनमें से कुछ चीजों से जूझ रहे थे जब तक कि रहस्योद्घाटन नहीं हुआ, भले ही कुछ लोग कहते हैं कि वे पुराने नियम में भी इसकी झलक देख सकते हैं। वह अपने सेवकों, पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं, जिनके बारे में आमोस ने चेतावनी दी है, और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं, विशेष रूप से नए नियम में प्रेरितों को अपना रहस्य प्रकट करता है। इफिसियों 1:3, 13 से 14.

वैसे, आधुनिक बाइबल में आपको जो चीज़ नहीं दिखेगी, वह है असली वाक्य। असली वाक्य को देखने के लिए, आपको ग्रीक न्यू टेस्टामेंट जैसे मूल भाषा के पाठ को देखने की ज़रूरत है। पुराने संस्करण, जैसे कि ASV, कई बार पूरा वाक्य बनाए रखते हैं, जो बहुत लंबा हो जाता है और कभी-कभी, आधुनिक अंग्रेजी के लिए, अजीब लगता है।

लेकिन वे इसका सम्मान करते हैं, और वे इसे बनाए रखते हैं। लेकिन जैसे भी, इफिसियों 1:3 से 14 में, यह 11 आयतें हैं, एक वाक्य। आयत 5 कहती है, हमें पहले से ही नियुक्त करके, हमें गोद लेने के लिए नियुक्त करके, हमें अपनी इच्छा का रहस्य बताकर, यानी हम उसके बच्चे बन गए हैं, उसके उद्देश्य के अनुसार पहले से ही नियुक्त किए गए हैं।

अब, उद्देश्य संप्रभुता को छूता है, है न? उसके बारे में जो अपनी इच्छा के अनुसार सभी काम करता है। बहुत बड़ा कथन। कुछ लोगों ने कहा है कि इफिसियों में पॉल के बारे में ज़्यादा लिखा है, भले ही यह रोमियों की पुस्तक से भी छोटा है।

इसलिए, यह अध्ययन करने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसलिए, ईश्वर की कृपा से हमारा प्रभुसत्ता संपन्न ईश्वर इतिहास में चीजों को अंजाम देता है। कभी अच्छा, कभी बुरा।

और बुराई की समस्या इसमें आती है। बुराई की समस्या यह है कि हमारे पास एक सर्व-भला ईश्वर है जो सर्वशक्तिमान है, और फिर भी बुराई होती है। इसलिए, नास्तिक कहेगा कि या तो वह सर्व-भला नहीं है, या वह सर्वशक्तिमान नहीं है, या ऐसा नहीं होगा।

खैर, यह आपकी राय है। यह ईश्वर की राय नहीं है। ईश्वर कहेंगे कि जीवन में बुराई इस अर्थ में अनुमति देती है और उसने अपने आदेश में उन उद्देश्यों के लिए होने की अनुमति दी है जिनके बारे में हम नहीं जानते।

मुझे लगता है कि यह उस व्यक्ति की तरह है जो जन्म से अंधा था। वह अंधा क्यों है? क्या यह उसके माता-पिता की गलती थी या उसकी? और यीशु ने कहा कि यह परमेश्वर और उसकी चंगाई की महिमा के लिए था। और इसलिए, हम जीवन की सकारात्मक चीजों के साथ-साथ नकारात्मक चीजों के बारे में भी जल्दी से निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते।

ईश्वर की गुप्त क्रियाओं का वर्णन बाइबल में किया गया है। हमने यहाँ-वहाँ कई ग्रंथ देखे हैं।

भगवान के गुप्त कार्यों तक पहुँचना हमारा काम नहीं है। आपको भगवान से यह नहीं पूछना चाहिए कि हे प्रभु, अब से दो सप्ताह बाद मेरे साथ क्या होने वाला है? हमें ऐसा करने के लिए कभी भी प्रोत्साहित या कहा या कुछ भी नहीं गया। हम ऐसा नहीं करते।

भगवान स्वर्ग में बैठकर हमें कुछ बताने का इंतज़ार नहीं कर रहे हैं। अगर आप अपना जीवन बदलना चाहते हैं, अगर आप जानते हैं कि भविष्य क्या है, तो आप अभी नहीं जी रहे हैं। पॉल और इफिसियन बुजुर्गों को याद करें? उन्होंने कहा कि आप यरूशलेम जा रहे हैं।

तुम रोमियों द्वारा बंदी बनाए जाओगे। पॉल कहता है कि मुझे इसकी परवाह नहीं है क्योंकि मैं अपने जीवन में दृढ़ निश्चयी हूँ कि वहाँ जाना परमेश्वर की इच्छा है। इसलिए मैं जा रहा हूँ।

भविष्य जानने से पॉल का मन नहीं बदला। इसलिए, भविष्य जानना अतिशयोक्तिपूर्ण है। शायद आपके लिए यह न जानना ही बेहतर होगा।

भगवान के गुप्त कार्यों का वर्णन पुष्ट किया गया है। भगवान के गुप्त कार्यों तक पहुँचना हमारा काम नहीं है। हम प्राप्तकर्ता हैं।

परिणामस्वरूप, हम अपने जीवनकाल में इसके परिणाम देख सकते हैं, लेकिन हमारे पास उसके कार्यों की वास्तविकता घोषित करने का कोई वास्तविक अधिकार नहीं है क्योंकि उसने हमें नहीं बताया। जो परमेश्वर ने प्रकट नहीं किया है, हम वास्तव में नहीं जानते। हम अनुमान लगा सकते हैं, और हम आश्चर्यचकित हो सकते हैं कि COVID-19 ने मानवता पर इतना प्रभाव क्यों डाला। सुनामी ने प्रशांत द्वीपों को क्यों मारा और इतने सारे लोगों को क्यों मारा? क्यों तूफान, उनमें से तीन एक के बाद एक, फ्लोरिडा से होकर आए? क्या हम अवज्ञाकारी रहे हैं, और यह एक निर्णय था? मुझे लगता है कि जब लोग इस तरह के बयान देते हैं, तो वे सीमाओं को लांघ रहे होते हैं।

हम अपनी दुनिया में होने वाली गतिविधियों का वर्णन नहीं कर सकते, और हम वास्तव में यह दावा नहीं कर सकते कि ईश्वर द्वारा बनाई गई प्रकृति और स्वयं ईश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बीच क्या संबंध है और वह क्या करना चाहता है। हम बाइबल में, विशेष रूप से पुराने नियम और कथाओं में दोनों ही चीजों को घटित होते हुए देखते हैं, लेकिन हमारे पास उस तरह की अंतर्दृष्टि नहीं है। हमें वह नहीं दिया गया है, और हमें इससे निपटने के लिए नहीं कहा गया है।

परिणामस्वरूप, हम परिणाम तो देख सकते हैं लेकिन उसके कार्यों की वास्तविकता को घोषित करने का कोई वास्तविक अधिकार नहीं है। एक अर्थ में, परमेश्वर हर चीज़ के पीछे है। दूसरे अर्थ में, परमेश्वर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कई साधनों का उपयोग करता है।

यह भगवान का काम है। यह जीवन का उनका संचालन है। इसे समझना हमारे बस की बात नहीं है।

यह भगवान का काम है, और इसे समझना हमारे बस की बात नहीं है। जोनी, मुझे उसका अंतिम नाम याद नहीं है, जो डाइविंग दुर्घटना का शिकार हुई थी और पूरी ज़िंदगी पैराप्लेजिक रही। फिर भी, उसने इसे भगवान की कृपा के प्रवक्ता के रूप में अपना करियर बना लिया।

उस त्रासदी के बावजूद, लोगों ने कई मौकों पर ऐसा किया है। कुछ लोगों को इसकी वजह से पहचान और बदनामी मिलती है। अन्य लोग नकारात्मक नियति के परिणामस्वरूप कष्टदायक, कठिन जीवन जीते हैं।

ईश्वर की दुनिया में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों ही मौजूद हैं। इसलिए, अगर आप जीवन में ज़्यादा सकारात्मक प्रावधान के प्राप्तकर्ता हैं, तो आपको इस तथ्य के लिए ईश्वर का धन्यवाद

करना चाहिए। ईश्वर मानव इतिहास में हर घटना का मार्गदर्शन करता है, और वह ब्रह्मांड के सभी पहलुओं को एक शानदार अंत की ओर ले जा रहा है।

ठीक है। ईश्वर की कृपा का अर्थ। हम मान सकते हैं कि ईश्वर हमेशा काम पर रहता है।

अब, ऐसा करना हमेशा आसान नहीं होता। अगर आप किसी... मेरे एक दोस्त की भी यही स्थिति थी। उसकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी।

वह अपनी गाड़ी में फंसा हुआ था। उसे पेट्रोल की गंध आ रही थी। उसकी आँख की पुतली उसके गाल पर पड़ी थी।

वे बहुत दबाव में बाहर आ जाते थे, और वह कुछ नहीं कर पाता था। वह असहाय था। उस समय उसके दिमाग में एक ही श्लोक आता था, हर चीज में आनन्द मनाओ।

खैर, यह अच्छी ईसाई परिपक्वता है, लेकिन इससे उसकी समस्याएँ हल नहीं हुईं। वह ठीक-ठाक बाहर आया। लेकिन सच्चाई यह है कि हमें यह मान लेना चाहिए कि ईश्वर हमेशा काम पर रहता है।

वह हमें दर्द से मुक्ति दिलाने के लिए, जरूरी नहीं कि गौण कारणों में हस्तक्षेप करे। उसने डैनियल के अपने तीन दोस्तों के लिए ऐसा किया। लेकिन आप फार्टी भट्टी में कूद जाते हैं।

आपको वही परिणाम नहीं दिखेंगे। हम उसके गुप्त काम को आधिकारिक रूप से घोषित नहीं कर सकते। हम उसका निरीक्षण कर सकते हैं।

हम आश्चर्य कर सकते हैं। लेकिन आप घोषणाएँ नहीं कर सकते। लेकिन हम उसकी बाहों में आराम कर सकते हैं।

भगवान हमारे चरवाहे राजा हैं। आप जानते हैं, पुराने नियम में, प्रभु मेरे चरवाहे हैं, मुझे कुछ नहीं चाहिए। चरवाहा, पुराने नियम में, प्राचीन निकट पूर्वी संदर्भ में, राजा के लिए एक रूपक था।

इसलिए, जब यह कहा जाता है कि परमेश्वर, प्रभु मेरा चरवाहा है, प्रभु मेरा राजा है और अपने राजत्व के अन्य पहलुओं को सामने लाता है। लेकिन परमेश्वर इन रूपकों के सभी विवरणों के साथ हमारा चरवाहा राजा है। यह विश्राम का स्थान है।

हम मनुष्य होने के नाते चीज़ों को समझना पसंद करते हैं। हम जानना चाहते हैं। हम विशेष रूप से जानना चाहते हैं।

मैं बिल्कुल ऐसा ही हूँ। मैं सामान्यता नहीं चाहता। मैं विशिष्टता चाहता हूँ।

और फिर भी, परमेश्वर ने हमेशा हमारे लिए ऐसा करने का चुनाव नहीं किया है। हमें परमेश्वर की प्रकट इच्छा, उसके वचन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमारा मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि हम उससे कैसे निपटते हैं।

मैं इस बात पर बहुत गहराई से विश्वास करता हूँ। जब हम यीशु के सामने खड़े होते हैं, तो सबसे बड़ा मुद्दा यह होगा कि मैंने जो संदेश आपको छोड़ा था, उसे आपने कैसे अपनाया? क्या आपने उसके अनुसार जीवन जिया या फिर उसे अनदेखा किया? मुझे लगता है कि मैं उस पंक्ति के अंत में रहना चाहता हूँ क्योंकि मुझे पता है कि वह दिन हममें से ज्यादातर लोगों के लिए बहुत शानदार नहीं होने वाला है। परमेश्वर की संप्रभुता की घोषणा करना आसान है।

यह कहना कि, ओह, यह भगवान की इच्छा है। ऐसा करना बहुत आसान है। नकारात्मकता और विनाश, उन घटनाओं में से कुछ की भयावहता और उनके निहितार्थों को समझाने के लिए हममें से ज्यादातर लोगों की क्षमता से ज्यादा की ज़रूरत होती है।

लेकिन ईश्वर की कृपा के भजन को समझने के लिए निश्चित रूप से गंभीर अध्ययन और शोध की आवश्यकता है। तो, यह ईश्वर की कृपा का मुद्दा है, यह ईसाई विश्वदृष्टि का एक प्रमुख हिस्सा है। कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, ईसाइयों ने इसका आविष्कार किया है ताकि उन्हें ऐसे ईश्वर से शर्मिंदा न होना पड़े जो उनका ख्याल नहीं रखता।

खैर, हमारे पास अन्य स्पष्टीकरण हैं, है न? भगवान की अपनी योजना है। वह नियत समय में अपनी योजना पूरी करेगा। और हम यह सब दूसरी तरफ देखेंगे।

यह कोई काल्पनिक बात नहीं है। यह वास्तविकता है, जैसा कि अभी है। चिंतन के लिए कुछ क्लासिक मुद्दे।

इस वर्ग का कार्य ईश्वर की प्रकट इच्छा पर ध्यान केंद्रित करना है। हम यहाँ ईश्वरीय व्यवस्था और संप्रभुता के गहरे मुद्दों की जांच नहीं कर सकते। यह दार्शनिक धर्मशास्त्र का कार्य है।

हमारा काम उनके वचन पर ध्यान केंद्रित करना, उनके वचन तक पहुँचने के बेहतर तरीके सीखना है, न कि सिर्फ यह कहना कि, ओह, यह आध्यात्मिक रूप से उचित काम है। जीवन में कुछ निर्णय लेने के अर्थ की गंभीरता के संबंध में यह बहुत ही कमज़ोर है। हमें चर्च के बारे में एक ऐसा विचार मिला है कि युद्ध के बारे में चर्च का क्या दृष्टिकोण है? लिंग, विशेष रूप से ट्रांसजेंडर के बारे में चर्च का क्या दृष्टिकोण है? कामुकता के बारे में चर्च का क्या दृष्टिकोण है? और हमने चर्च को उनमें से कुछ क्षेत्रों में कई स्तरों पर विफल होते देखा है।

गहन सोच वाले क्षेत्रों का कार्य है। ऐसे मुद्दे जो हमेशा बुराई की समस्या को चुनौती देते हैं। मैं यहाँ पीछे हूँ, आप टीवी के कारण नहीं देख सकते, यह यहाँ अस्थायी रूप से व्याख्यान देने के लिए है।

मेरे पास ईश्वर की कृपा और बुराई की समस्याओं पर पुस्तकों से भरी एक शेल्फ है। और मैं पढ़ रहा हूँ, और मैं अभी भी अपना सिर हिला रहा हूँ। मैं समझ सकता हूँ, मैं समझ नहीं सकता।

यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। मैं यह कहते-कहते थक गया हूँ कि, ओह, मैं त्रित्व को समझ नहीं सकता। अच्छा, आपको क्या लगता है कि आप क्या नहीं कर सकते? आप नहीं कर सकते? नहीं, आप नहीं कर सकते।

यह मूर्खतापूर्ण है। क्या आप इसे समझ सकते हैं? समझने का मतलब है कथनों को निहितार्थ के आधार पर समझना, खास तौर पर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में शास्त्रों में। मुझे इसे समझने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं इसे समझ सकता हूँ।

मैं ऐसी बहुत सी बातें समझ सकता हूँ जो मुझे समझ में नहीं आतीं। समझ और बोध में बहुत बड़ा अंतर है। बुराई की समस्या, अनुत्तरित प्रार्थना की चुनौती।

हम इस बारे में थोड़ी बात करेंगे। मेरे पास सभी उत्तर नहीं हैं। दोस्तों, मेरे पास ऐसे बहुत से पाठ हैं, जिनके बारे में मैंने कुछ क्षेत्रों में नहीं बताया है।

मेरे सभी सहकर्मी भी यही सोचते हैं। इसलिए, मैं अच्छी संगति में हूँ। हम ईश्वरीय कृपा और संप्रभुता के गहरे मुद्दों की जांच नहीं कर सकते।

यह कार्य हम सभी के लिए हमेशा एक चुनौती है। इसलिए, बुराई की समस्या, अनुत्तरित प्रार्थना की चुनौती, ईश्वर की प्रतीत होने वाली चुप्पी। सर रॉबर्ट एंडरसन ने कई शताब्दियों पहले ईश्वर की चुप्पी के बारे में एक किताब लिखी थी।

और ऐसा लगता है कि आपकी प्रार्थनाएँ ऊपर जाती हैं और छत से टकराती हैं और वापस आपके चेहरे पर आ गिरती हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि परमेश्वर अभी भी अपने सिंहासन पर विराजमान है - जीवन की वास्तविकता पर हमारी उलझन।

हम कभी भी इसका पता नहीं लगा पाएंगे, इसलिए हार मान लो। समर्पण कर दो। अय्यूब इसका पता नहीं लगा सका।

वह, मैं कल्पना नहीं कर सकता। अय्यूब मुझसे बेहतर आदमी था, बहुत बेहतर। उसका क्या हाल हुआ? खैर, उसने सब कुछ खो दिया।

उसने सब कुछ खो दिया, लेकिन उसने परमेश्वर के साथ अपनी ईमानदारी नहीं खोई। इसलिए, ईश्वरीय कृपा एक चुनौती है। आपको इसका अध्ययन करना शुरू करना होगा।

मैं नहीं कर सकता, मेरे पास अभी आपको इसका अंतिम निष्कर्ष बताने का कोई आसान तरीका नहीं है। वर्तमान अध्ययन ईश्वर की संप्रभुता और संप्रभु प्रावधान के शास्त्रीय दृष्टिकोण की पुष्टि करता है।

आपके वर्तमान शिक्षक जीवन का वर्णन करने के लिए सकारात्मक प्रोविडेंस और नकारात्मक प्रोविडेंस का उपयोग करते हैं, बिना कारण-कार्य संबंध को समझाने की कोशिश किए। यही बात

मुझे वास्तव में चुनौती देती है। संप्रभु प्रोविडेंस का अध्ययन आपकी सोच के सबसे गहरे स्तरों को चुनौती देगा।

यह ईमानदार होने के मामले में एक गहरा विषय है, न कि जिसे हम थियोडिकाइज़िंग कहते हैं। थियोडिकाइज़िंग एक तरह से तर्क करना है जो ईश्वर की रक्षा करता है। मैं ईश्वर की रक्षा करने वाला कौन हूँ? हमें ये सवाल ईमानदारी से पूछने चाहिए और उनका पीछा करना चाहिए, और यही सबसे अच्छा है जो हम कर सकते हैं।

संसाधन, मैं इनके बारे में नहीं बताऊंगा। आप उन्हें नोट्स में देख सकते हैं, और उन्हें पुनः प्राप्त करने की आपकी क्षमता के लिए, मैं स्पीगेल वॉल्यूम से शुरू करने की अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ। फ्रेम हमेशा बहुत अच्छा होता है।

तो यह संप्रभुता का मुद्दा है। अंत में, कुछ छोटी समय सीमा के भीतर एक व्याख्यान, भले ही हमने इसे पवित्र आत्मा के साथ किया था। ठीक है, हमारा अगला व्याख्यान, जो कुछ हद तक छोटा होगा, प्रार्थना और ईश्वर की इच्छा पर होगा।

और हम इस बारे में संक्षेप में बात करेंगे, और मैं आपको सोचने के लिए और भी बहुत कुछ दूँगा और ऐसे और भी सवाल दूँगा जिनका मैंने जवाब नहीं दिया है। तो, आपका दिन शुभ हो। भगवान आपका भला करे।

और आप जहाँ भी हों, अगर आप दुखी हैं, और अगर आप दुनिया के किसी दूर-दराज के हिस्से में गंभीर संकट में हैं, तो हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान आपके साथ रहें और आपके सामने आने वाले कठिन समय में आपकी मदद करें। आपका धन्यवाद।